

इस प्रश्नपत्र में से कम या ज्यादा मात्रा में प्रश्न दिनांक ६ मार्च, २०१६ को होनेवाली मुख्य परीक्षा में पूछे जाएंगे। अभ्यास क्रम में सामिल पुस्तक की अंतिम संस्करण का ही उपयोग करें।

बोचासणवासी श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण संस्था
सत्संग शिक्षण परीक्षा

पूर्व कसौटी : सत्संग प्रवेश : प्रश्नपत्र - १

जनवरी, २०१६

समय : सुबह ९.०० से ११.१५

कुल गुणांक : ७५



अनुपस्थित परीक्षार्थी की उत्तर पुस्तिका का केवल यही पृष्ठ वापस भेजना है।

☞ परीक्षार्थी के नाम सम्बंधित विवरण के साथ 'बारकोड' अंकित किया गया है। कृपया उस पर किसी प्रकार का नुकसान मत कीजिए।

मोडरेशन कार्यालय के लिए	प्रश्न नंबर (गुण)	प्राप्तांक
	१ (९)	
	२ (६)	
	३ (५)	
	४ (५)	
	५ (४)	
	६ (४)	

विभाग-१, कुल गुण (३३)

☞ अनिवार्य : निम्न लिखित सूचना की परीक्षार्थी को अपने आप पूर्ति करनी है ☞

बिना वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर की उत्तर पुस्तिका मान्य नहीं होगी।

परीक्षार्थी का जन्म दिन दिनांक महिना वर्ष

परीक्षार्थी का अभ्यास

परीक्षार्थी की उत्तर पुस्तिका पर अंकित नाम सहित अनिवार्य विवरण की सत्यता की जाँच करने के पश्चात् वर्ग निरीक्षक हस्ताक्षर करें।

वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर

मोडरेशन कार्यालय के लिए	प्रश्न नंबर (गुण)	प्राप्तांक
	७ (९)	
	८ (४)	
	९ (५)	
	१० (४)	
	११ (६)	
	१२ (४)	

विभाग-२, कुल गुण (३२)

☞ पीछे दी गई सूचनाओं का अवश्य पालन करें।

परीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षक की नोंद :-

मोडरेशन कार्यालय के लिए	प्रश्न नंबर (गुण)	प्राप्तांक
-------------------------------	------------------------	------------

विभाग-३, कुल गुण

	१३ (१०)	
--	---------	--

मोडरेशन विभाग भाटे ४

गुण आंकांमां

शब्दोमां

येकरनुं नाम

॥ परीक्षार्थीओं को महत्वपूर्ण सूचनाएँ ॥

१. परीक्षार्थी सत्संग प्रारंभ से प्राज्ञ - ३ तक की क्रमशः हर परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद ही अगली परीक्षा दे सकते हैं ।
२. सत्संग शिक्षण परीक्षा के मुख्य दिन परीक्षार्थी के नामलिखित मुख्य पृष्ठ परीक्षा कार्यालय द्वारा प्रिन्ट करके भेजा जाता है । उसके अनुसार ही परीक्षार्थी को परीक्षा की श्रेणी (प्रारंभ, प्रवेश, परिचय आदि...) एवं माध्यम (गुजराती, हिन्दी, English) में परीक्षा देनी होगी । इसमें किसी प्रकार का परिवर्तन करके दी गई परीक्षा मान्य नहीं होगी ।
३. परीक्षार्थी को पूर्वकसौटी के प्रश्नपत्र की श्रेणी (प्रारंभ, परिचय, प्राज्ञ-१, केवल प्रथम.....) एवं परीक्षा के माध्यम (गुजराती, हिन्दी, English) अनुसार ही मुख्य परीक्षा देनी होगी । पूर्वकसौटी की जानकारी के अनुसार परीक्षा केन्द्र के मुख्य परीक्षा कार्यकर्ता को अंतिमसूची (Final List) भेजी जाती है, उसके अनुसार ही मुख्य परीक्षा के दिन परीक्षा देनी होगी । अंतिमसूची से अलग दिये गए विवरणवाली परीक्षा रद्द मानी जाएगी और ऐसी उत्तर पुस्तिका का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा ।
४. मुख्य परीक्षा के दिन परीक्षा खंड में उपस्थित हर एक परीक्षार्थी अपनी नामलिखित उत्तर पुस्तिका लेकर तथा उसमें मांगा गया अन्य विवरण (जन्म दिनांक, शिक्षा) लिखकर वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर अवश्य करवा लें । वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर बिना लिखी गई उत्तर पुस्तिका रद्द (केन्सल) मानी जाएगी और उसका मूल्यांकन भी नहीं किया जाएगा ।
५. परीक्षार्थी केवल ब्लू या काली स्याही वाली पेन से ही उत्तर पुस्तिका में उत्तर लिखें । पेन्सिल अथवा लाल, हरी या अन्य स्याही से लिखे गए उत्तर या एक से ज्यादा स्याही से लिखी गई उत्तर पुस्तिका मान्य नहीं होगी ।
६. सूचनानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए । काटकूट किए हुए उत्तर मान्य नहीं होंगे । अस्पष्ट और पढ़ा न जा सके, ऐसे उत्तर मान्य नहीं होंगे । एक से ज्यादा प्रकार के अक्षरों की लिखावटवाली उत्तर पुस्तिका रद्द (केन्सल) मानी जाएगी और उसका मूल्यांकन भी नहीं किया जाएगा ।
७. परीक्षा खंड के बाहर अथवा अन्य सभी परीक्षार्थीओं से अलग या परीक्षा के नियमों का उल्लंघन कर के दी गई परीक्षा मान्य नहीं होगी ।
८. सत्संग शिक्षण परीक्षा कार्यालय, अहमदाबाद की पूर्व अनुमति के बिना मूल परीक्षार्थी के बदले 'स्थानापन्न' या 'सबस्टीट्यूट राइटर' अथवा 'दूसरे व्यक्ति' द्वारा लिखी गई परीक्षा की उत्तर पुस्तिका रद्द मानी जाएगी ।
९. सत्संग शिक्षण परीक्षा कार्यालय, अहमदाबाद को पूर्व अवगत किए बिना, रजिस्टर्ड परीक्षा केन्द्र के बदले में अन्य परीक्षा केन्द्र से दी गई परीक्षा रद्द (केन्सल) मानी जाएगी और उसका मूल्यांकन भी नहीं किया जाएगा ।
१०. सत्संग प्रवेश, परिचय, प्रवीण एवं सत्संग प्राज्ञ (प्राज्ञ के दोनों प्रश्नपत्रों में रजिस्टर्ड हुए) के लिए परीक्षार्थियों को दोनों प्रश्नपत्रों की परीक्षा देनी अनिवार्य है । किसी भी एक ही प्रश्नपत्र की दी गई परीक्षा की उत्तर पुस्तिका का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा ।
११. मुख्य परीक्षा के दिन उत्तर पुस्तिका के अलावा अतिरिक्त पन्नों में लिखे हुए उत्तरों का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा ।
१२. परीक्षा-कक्ष में परीक्षा के दौरान किसी भी परीक्षार्थी को मोबाईल फोन तथा इलेक्ट्रॉनिक साधन जैसे टेब्लेट, लेपटॉप आदि का उपयोग करने तथा उसे अपने पास रखने की अनुमति नहीं है ।
१३. प्राज्ञ की परीक्षा का फॉर्म भरने से पहले निम्नलिखित मुद्दे ध्यान में रखें ।
 - परीक्षार्थी एक ही साल में दोनो प्रश्नपत्र दे सकता है । अथवा पहले साल में पहला प्रश्नपत्र और दूसरे साल में दूसरा प्रश्नपत्र दे सकता है । पहले प्रश्नपत्र में उत्तीर्ण (पास) होने के बाद ही दूसरा प्रश्नपत्र दिया जा सकता है । प्राज्ञ परीक्षा में केवल प्रथम प्रश्नपत्र या दूसरा प्रश्नपत्र देनेवाले को उत्तीर्ण होने के लिए उस प्रश्नपत्र में ४५ अंक प्राप्त करना आवश्यक है ।
 - जिस परीक्षार्थी ने प्राज्ञ के दोनो प्रश्नपत्र में रजिस्ट्रेशन कराया हो और यदि वह परीक्षार्थी किसी एक प्रश्नपत्र में ही उपस्थित रहता है और दूसरे प्रश्नपत्र में अनुपस्थित रहता है, तो एक प्रश्नपत्र की दी गई उत्तर पुस्तिका का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा । जिस परीक्षार्थी ने प्राज्ञ के दोनो प्रश्नपत्र दिए हों, उसे उत्तीर्ण होने के लिए ९० अंक प्राप्त करने होंगे ।
 - प्राज्ञ परीक्षा देने वाले सभी परीक्षार्थी कृपया ध्यान रखें कि जो परीक्षार्थी अलग-अलग साल में प्रश्नपत्र प्रथम और प्रश्नपत्र दूसरा देते हैं, उनको प्रथम प्रश्नपत्र ४५ या उससे ज्यादा अंक से उत्तीर्ण करने के बाद दूसरा प्रश्नपत्र ज्यादा से ज्यादा एक ही साल के विराम के बाद देना होगा । एक से ज्यादा साल की अनुपस्थिति के बाद दिया हुआ दूसरा प्रश्नपत्र स्वीकृत नहीं होगा । ऐसे परीक्षार्थी को पुनः प्राज्ञ का प्रथम प्रश्नपत्र अथवा दोनों प्रश्नपत्र देने होंगे ।
 - प्राज्ञ परीक्षा के पारितोषिक विजेता की सूची में आनेवाले परीक्षार्थी में से जिन्होंने प्राज्ञ के दोनो प्रश्नपत्र एक साथ एक ही साल में दिया हो, उनको १० प्रतिशत (फिसदी) अंक पुरस्कार के रूप में दिए जाएंगे और इस तरह परीक्षार्थी पुरस्कार के योग्य माना जाएगा ।
 - नोंध : जिस परीक्षार्थी ने भारत की प्रवीण परीक्षा उत्तीर्ण की हो, ऐसे ही परीक्षार्थी प्राज्ञ-१ परीक्षा दे सकते हैं ।
१४. अवैद्य रजिस्ट्रेशन !!! परिणाम नहीं मिलेगा !!!

विभाग - १ : नीलकंठ चरित्र - तृतीय संस्करण, नवम्बर - २०११

प्र. १ निम्नलिखित कथन कौन, किसको और कब कहता है, यह लिखिए ।

[९]

१. “बालक होकर ब्रह्मांड को ललकार रहा है ?”

कौन कहता है ? किसको कहता है ?

कब कहता है ?

.....

.....

२. “वसिष्ठ ऋषि उँचे आसन पर बिराजमान होते थे, जब कि भगवान श्रीराम उनके समक्ष भूमि पर बिराजमान होते थे ।”

३. “भाई, तुम कौन हो और तुम्हारी इस झोली में क्या रखा है ?”

प्र. २ निम्नलिखित कथनों के बारे में कारण लिखिए । (दो से तीन पंक्ति में)

[६]

१. बदरीनाथ के पुजारी ने बड़ी श्रद्धा से नीलकंठ वर्णी की सेवा की ।

.....

.....

.....

.....

२. जयदेव ने अपनी पुत्री का विवाह मुकुंददेव के पुत्र से तोड़ दिया ।

३. संयोगी साधु नीलकंठ वर्णी को कृष्णमंदिर में ले आये ।

प्र. ३ निम्नलिखित किन्हीं एक प्रसंग के बारे में १५ पंक्ति में टूकनोंध लिखिए । (वर्णनात्मक)

[५]

१. नीलकंठ वंशीपुर में ।

२. हिमालय के साथ मिलन ।

३. वेणीराम को दर्शन दिया और रघुनंदन को जीवन !

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

- प्र. ४ निम्नलिखित प्रश्नों के एक (संपूर्ण) वाक्य में उत्तर लिखिए । [५]
- सभी संतों तथा हरिभक्तों ने धर्मधुरा के योग्य पात्र किस को समझा ?
.....
.....
 - रामानंद स्वामी ने नीलकंठ वर्णी को कब महादीक्षा दी ?
 - लालजी सुथार कहाँ रहते थे ?
 - हाटकेश्वर महादेव के मंदिर में नागर मुमुक्षु ने नीलकंठ वर्णी को कितने प्रश्न पूछे ?
 - लखुबाई कौन से गाँव की थी ?
- प्र. ५ निम्नलिखित विकल्पों में से केवल सही विकल्प के आगे दिए गए खाने में सही (✓) का निशान करें । [४]
- सूचना : एक या एक से अधिक विकल्प सही हो सकते हैं । सभी सही विकल्प के आगे ही सही का निशान किया होगा तभी पूर्ण गुण दिए जायेंगे, अन्यथा एक भी गुण नहीं दिया जाएगा ।
- नीलकंठ वर्णी की तपश्चर्या ।
(१) ☐ नरनारायण देव अंतरिक्ष में रक्षा करते थे ।
(२) ☐ साक्षात् ब्रह्मा ही तप करने पधारे हैं ।
(३) ☐ हे देव ! हमें ज्ञान और तप के गुण दीजिए ।
(४) ☐ यहाँ ब्रह्मा के पुत्र पुलह ने तप किया था ।
 - आसुरी बाबाओं का विनाश हुआ ।
(१) ☐ जनकपुर (२) ☐ वेंकटाद्रि (३) ☐ मानसपुर (४) ☐ कांचीपुरम
- प्र. ६ निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए । [४]
- गाँव में स्वामी बावड़ी में पानी भर ने को आए ।
 - कानदास को के आगमन की खबर ने दी ।
 - बुटोलनगर में नीलकंठ वर्णी माह तक राजा के वहाँ रुके ।
 - संवत् के माह में रामानंद स्वामी अंतर्धान हुए ।
- विभाग - २ : सत्संग वाचनमाला भाग- १ - प्रथम संस्करण, जून - १९९७
- प्र. ७ निम्नलिखित कथन कौन, किसको और कब कहता है, यह लिखिए । [९]
- “तुम यदि थाल-नैवेद्य कराओ तो हम अच्छे हो जायेंगे ।”
कौन कहता है ? किसको कहता है ?
कब कहता है ?
.....
 - “उनकी दी हुई मनौती अवश्य सफल होगी ।”
 - “शुकमुनि को बुला कर लाओ, एक चिट्ठी लिखवानी है ।”
- प्र. ८ निम्नलिखित कथनों के बारे में कारण लिखिए । (दो से तीन पंक्ति में) [४]
- महाराज एभल खाचर को पता न लगे इस तरह दरबार में रहने लगे ।
.....
.....
.....
 - साधु धर्मनन्दनदास के पास आशाभाई ने पंचव्रत पालन की दीक्षा ली ।

सूचना : (१) केवल सही क्रमांक के सभी छः उत्तर क्रमांक सही होंगे तो ही ३ गुण प्राप्त होंगे । (२) यथार्थ घटनाक्रम भी सही होगा तो ही ३ गुण प्राप्त होंगे, अन्यथा एक भी गुण प्राप्त नहीं होगा ।

प्र.१२ निम्नलिखित गलत वाक्य को उसके विषय के अनुलक्ष्य में सही लिखिए ।

[४]

सूचना :- संपूर्ण वाक्य सही लिखा होगा तो ही गुण प्राप्त होंगे, अन्यथा एक भी गुण प्राप्त नहीं होगा ।

उदाहरण : स्वामी यज्ञप्रियदासजी : मोतीभाई के पुत्र जेठाभाई, खेत में घुमते समय बिच्छू के काटने से धाम में गए । बाद में श्रीजीमहाराज के साथ आकर मोतीभाई को नारायण कहा ।

उत्तर : स्वामी यज्ञप्रियदासजी : आशाभाई के पुत्र देसाईभाई चारागाह में काम करते समय सर्पदंश होने से धाम पधारे । बाद में भगतजी महाराज के साथ आकर आशाभाई को जय स्वामिनारायण कहा ।

१. सद्गुरु ब्रह्मानंद स्वामी : आणन्द तहसीले के सामरखा गाँव में संवत् १७२८ की अक्षय तृतीया के दिन प्रकट हुए ये बाल भक्तकवि जामनगर के राव (महाराजा) के मेहमान हुए ।

उ.

२. सद्गुरु शुकानन्द स्वामी : स्वामी का निवासस्थान जो श्रीजीकक्ष था, बिल्कुल उसके सामने ही मुक्तमुनि का कमरा था । वहीं रहकर वे रोज़ लेखन एवं साहित्य सम्पादन का काम किया करते थे ।

३. भक्तराज दरबार श्री झीणाभाई : झीणाभाई को घूमने का व्यसन हो गया था, वे स्वामी के दर्शन के लिए आधा समय पड़ोश के गाँव जूनागढ़ में रहते थे, आधा समय मांगरोळ में बिताते थे ।

४. स्वामी यज्ञप्रियदासजी : बराबर सोलह दिनों के बाद रात को दो बजे जबकि वे घर पर बैठे हुए थे, कुछ सोच-विचार में थे ।

विभाग - ३ : निबंध

प्र.१३ निम्नलिखित किसी एक विषय पर करीब ३० पंक्ति में निबंध लिखिए ।

[१०]

१. गुरु स्मृति के अमृतबिंदु : दिव्य अनुभूति और वात्सल्य वर्षा गुरु हरि की ।

(स्वामिनारायण प्रकाश (गुजराती) दिसम्बर-२०१४, पा.नं. १४-१७)

२. शास्त्रीजी महाराज : अजोड़ समर्थ महापुरुष ।

(स्वामिनारायण प्रकाश (गुजराती) जनवरी-२०१५, पा.नं. २७-२९)

३. प्रमुखस्वामी में विश्व शांति के दर्शन । (स्वामिनारायण प्रकाश (गुजराती) अगस्त-२०१५, पा.नं. १८-२१)

()

.....
.....
.....

॥ आगे के पृष्ठों में उपरोक्त तीन निबंध (गुजराती भाषा में) का विवरण दिया गया है ।

.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....

* * *

॥ अगत्य की सूचना : सभी परीक्षार्थी अपनी संस्था की निम्नलिखित website - link पर से पुराने सालों के प्रश्नपत्र और उसके उकेलपत्र निःशुल्क डाउनलोड कर सकते हैं और उसकी प्रिन्ट भी निकाल सकते हैं ।

<http://www.baps.org/Satsang-Exams.aspx>

પરીક્ષાર્થી શ્રી,
સસ્નેહ જય શ્રી સ્વામિનારાયણ

**સત્સંગ શિક્ષણ પરીક્ષા માર્ચ ૨૦૧૬ના નિબંધોની પૂર્વ તૈયારી માટે
નીચે જણાવેલ માર્ગદર્શન અને સૂચનો ધ્યાનમાં લેવા વિનંતી.**

૧. નિબંધ એટલે કોઈ નિશ્ચિત વિષય ઉપર વ્યવસ્થિત, ચિંતનપૂર્વક અને મુદ્દાસરનું લખાણ. સત્સંગ શિક્ષણ પરીક્ષામાં પૂછાતા નિબંધો સામાન્ય જ્ઞાનના આધારે, પરીક્ષાર્થીના દૈનિક જીવનમાં સત્સંગના સદ્વાંચન અને કથા શ્રવણ અને મનન દ્વારા પ્રાપ્ત થયેલ જ્ઞાનની કસોટી કરતા ૩૫ થી ૪૦ લીટીમાં લખવાના હોય છે.
૨. પરીક્ષાર્થીઓની માગણીને માન આપીને આ વર્ષે પ્રી-ટેસ્ટમાં પૂછાનાર નિબંધોના વિષયો અગાઉથી પરીક્ષાર્થીના એકાઉન્ટમાં અપલોડ કરવામાં આવ્યા છે.
૩. પ્રી-ટેસ્ટમાં જે તે પરીક્ષામાં પૂછાનાર નિબંધોના ત્રણે ત્રણ વિષયો આપવામાં આવ્યા છે. માર્ચ ૨૦૧૬ની ફાઈનલ પરીક્ષામાં આ ત્રણ વિષયોમાંથી કોઈપણ એક નિબંધ ચોક્કસપણે પૂછાશે જ. માટે જો આપ આ ત્રણે ત્રણ વિષયો તૈયાર કરશો તો આપ ચોક્કસપણે એક નિબંધ મુખ્ય પરીક્ષામાં ખૂબ જ સારી રીતે લખી શકશો.
૪. આ નિબંધોનું સામાન્ય બંધારણ, લખાણ(મેટર) જૂના ‘સ્વામિનારાયણ પ્રકાશ’માંથી લેવામાં આવે છે.
૫. અહીં આપેલા નિબંધોનું લખાણ કેવળ દિશા સૂચક છે. આ જ લખાણ ગોખીને પરીક્ષામાં લખવાની જરૂર નથી. આથી વિશેષ સારા મુદ્દાઓનું ચિંતન-મનન કરી આપની રીતે પૂર્વ તૈયારી કરીને લખી શકો છો.
૬. ગુજરાતી માધ્યમ (ભાષા) સિવાયના પરીક્ષાર્થીઓ માટે : આ નિબંધોનું મૂળ પ્રકાશન ગુજરાતી ભાષામાં જ હોવાથી તેનું શબ્દશઃ ભાષાંતર ન કરતાં, તેનો ભાવાર્થ સમજીને પરીક્ષાર્થીએ પોતાની રીતે સમજીને તૈયારી કરવાની રહેશે. પરીક્ષા કાર્યાલય અંગ્રેજી કે હિન્દી ભાષામાં આ નિબંધોનું ભાષાંતર આપી નહિ શકે. તેથી ભાષાંતર કરવા અંગેનો પત્રવ્યવહાર કે ઈ-મેલ પણ પરીક્ષા કાર્યાલયને કરશો નહિ તેવી નમ્ર વિનંતી છે.
૭. ગુજરાતી ભાષા વાંચી, લખી કે બોલી ન શકતા હોય તેવા પરીક્ષાર્થીઓએ માતા-પિતા, વડીલો કે અન્ય સ્વજનો-સ્નેહીઓ પાસે વંચાવીને નિબંધનો ભાવાર્થ સમજી પોતાની રીતે, પોતાના શબ્દોમાં લખીને તૈયારી કરવાની રહેશે.
૮. One essay from the list of essays will be asked in the Final Examination of March-2016.

સત્સંગ પ્રવેશ

નિબંધ - ૧

ગુરુ સ્મૃતિનાં અમૃતબિંદુઓ :
દિવ્ય અનુભૂતિ અને વાત્સલ્ય વર્ષા ગુરુહરિની

**Nectar of guru's memories: Divine experience
and affection of Guruhari.**

શાસ્ત્રીજી મહારાજે મને ગોંડલમાં દીક્ષા આપેલી. યોગીજી મહારાજ અક્ષરદેરીમાં મહાપૂજા કરતા હતા. શાસ્ત્રીજી મહારાજ સામે બેઠા હતા, ને ત્યાં અક્ષરદેરીમાં દીક્ષા આપેલી.

દીક્ષા બાદ મારે ગોંડલ જ રહેવાનું થયેલું. ત્યાં એક શાસ્ત્રી પાસે શાસ્ત્રીજી મહારાજની આજ્ઞાથી હું તથા બીજા સંત અક્ષરજીવનદાસ સંસ્કૃતનો અભ્યાસ કરવા રહ્યા હતા. અભ્યાસ માટે રોકાયા એટલે સહેજે કોઠારી અક્ષરસ્વરૂપદાસ જે ઠાકોરજીની પૂજા કરતા હતા તેમની સાથે મંદિરમાં ઠાકોરજીની સેવા-પૂજા કરવા જતા. ઠાકોરજીની આરતી કરતા, શંખ ભરતા, વાસણો સાફ કરતા. એ બધું કરીએ. આપણને વાઘા પહેરાવતાં આવડે નહીં. એ બધું શીખવાનું અને એ રીતે દરરોજ ઘનશ્યામ મહારાજની સેવા કરતો.

આમ સેવા કરતાં મહિનો થયો હશે. ત્યાં એવી વાતો ચાલતી હતી કે હવે શાસ્ત્રીજી મહારાજ આવશે. નવો સાધુ થયેલો એટલે સ્વાભાવિક શાસ્ત્રીજી મહારાજ તરફ વિશેષ ભાવ રહે. સ્વામીનાં દર્શન થાય, મળે એવું સ્વાભાવિક થયા કરે.

એક દિવસ સવારના પહોરમાં સ્વાભાવિક બેઠો હતો. હું મંગળામાં ઘનશ્યામ મહારાજની આરતી કરવા, પૂજા કરવા જાઉં એટલે સહેજે વહેલો ઊઠતો. વહેલા ઊઠી, નાહી-ધોઈ, પૂજા કરીને ત્યાં જતો. પૂજા ન થઈ હોય તો નાહી-ધોઈને જતો, પછી પૂજા કરતો. એ દિવસે ઊઠ્યો, નાહીને આવ્યો એટલામાં કોઈકે વાત કરી કે શાસ્ત્રી મહારાજ આવ્યા. એટલે એમનાં વહેલાં દર્શન થઈ જાય એટલા માટે એમના ઓરડા તરફ હું એકદમ દોડ્યો. ત્યાં પહોંચ્યો તો કોઈ નહોતું, એટલે મને થયું કે સ્વામી ઉપર દર્શન કરવા ગયા હશે. એટલે મંદિરમાં ઉપર દર્શન કરવા ગયો.

મંદિર ઉપર ગયો ત્યારે ઘનશ્યામ મહારાજ પલંગમાં પથારીમાં સૂતેલા હતા! સૂતા હતા પણ જાગ્રત હતા. તે એકદમ બેઠા થયા. જેમ પલંગમાં બેસે એ રીતે બેઠા થયા. પછી મેં કહ્યું, ‘શાસ્ત્રી મહારાજ અહીં આવ્યા છે, ને તે ક્યાં છે?’ સ્વાભાવિક રીતે જ પૂછ્યું એટલે મને કહે, ‘નીચે ગયા.’ વળી, પાછો હું નીચે ગયો. નીચે ગયો પણ મને ક્યાંય સ્વામી જોવામાં ન આવ્યા, એટલે મને થયું કે મંગળા આરતીનો સમય થયો છે એટલે ઉપર ગયા હશે. મંગળા આરતી બાકી હતી. એટલે ફરી પાછો ઉપર ગયો. ત્યાં ઘનશ્યામ મહારાજ પલંગ પર પગ લબડાવીને બેઠા હતા. શાસ્ત્રી મહારાજનાં પણ ત્યાં દર્શન થયાં. હું પગે લાગ્યો. ઘનશ્યામ મહારાજે માથે હાથ મૂક્યા. આશીર્વાદ આપ્યા. શાસ્ત્રીજી મહારાજે આશીર્વાદ આપ્યા અને પછી સ્વામી એકદમ ઘનશ્યામ મહારાજની મૂર્તિમાં અદૃશ્ય થઈ ગયા! બેયનું એક સ્વરૂપ થઈ ગયું!

મને થયું, સ્વામી ક્યાં ગયા? સ્વામી અદૃશ્ય થયા એટલે પાછો હું નીચે ગયો. નીચે મેં બધાને પૂછ્યું, ‘શાસ્ત્રી મહારાજ આવ્યા છે તે ક્યાં ગયા?’

બધા કહે, ‘શાસ્ત્રી મહારાજ અહીં આવ્યા જ નથી. કોણે કહ્યું આવ્યા છે?’

મેં કહ્યું, ‘મને દર્શન થયાં. અહીં આવ્યા છે. ઉપર ઘનશ્યામ મહારાજ આગળ મળ્યા.’

બધા કહે, ‘આવ્યા જ નથી.’

એટલે એ રીતે ઘનશ્યામ મહારાજનાં દર્શન થયેલાં. મને સંતોએ કહ્યું, ‘એ સ્વામી નહીં, પણ તને સ્વામીની લગની હતી એટલે તને સ્વામીનાં અને ઘનશ્યામ મહારાજનાં દર્શન થયાં.’ એ રીતે દર્શન થયેલાં.

પ્રશ્ન : ગોંડલ ઘનશ્યામ મહારાજનાં દર્શન થયાં તો આપ તેમની સાથે વધુ વાત કરવા શા માટે ઊભા ન રહ્યા ?

સ્વામીશ્રી : ‘મૂળ તો શાસ્ત્રીજી મહારાજ સાથે હેત, પ્રેમ, લગની. એ આવ્યા છે તો તેમને મળવું છે એ લગની. એમની સાથે વાતચીત કરવી છે એ દૃષ્ટિ હોય એટલે એવું રહે કે સ્વામી ક્યાં છે ? અને સ્વામી માટે ભાવ એટલે વિશેષ એમની જ તમન્ના રહે. જેમ ભગતજી મહારાજને ગુણાતીતાનંદ સ્વામીએ કહ્યું, ‘સાધુ દેખાયા તો ભગવાન દેખાશે. એટલે મૂળ તો ગુરુની અંદર બધો જ ભાવ આવી ગયેલો. તેથી આપણને ગુરુમાં જ સુખ-આનંદ-હેત-પ્રેમ એટલું બધું થાય કે સ્વાભાવિક એમની વાત સાંભળી દર્શન કરવા દોડાદોડ કરવાનું મન થઈ જાય. એટલે બીજી વાત કરવાની રહેતી નથી. એટલે ફક્ત સ્વામીની વાત પૂછીને દોડી ગયા.’ ♦

શાસ્ત્રીજી મહારાજ : અજોડ સમર્થ મહાપુરુષ

Unique, capable and great personality: Shastriji Maharaj

બ્રહ્મસ્વરૂપ શાસ્ત્રીજી મહારાજના દિવ્ય વ્યક્તિત્વનું આલેખન
કરવા માટે પરમ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજ
પોતાનું મુખ ખોલે છે, ત્યારે એમના રોમરોમમાંથી નિર્ઝરતી પોતાના એ
ગુરુદેવ પ્રત્યેની અનન્ય નિષ્ઠા અને પ્રીતિ સૌ કોઈના હૈયાને ઝણઝણાવી દે છે.
કેવા સમર્થ મહાપુરુષ હતા, શાસ્ત્રીજી મહારાજ ?
જુદા જુદા પ્રસંગોએ સ્વામીશ્રીએ કરાવેલું તેનું આચમન અહીં પ્રસ્તુત છે...

પૂજ્ય શાસ્ત્રીજી મહારાજ સામાન્ય નહોતા. સમર્થ હતા. પ્રકાંડ વિદ્વાન હતા. એમને ઊંડું શાસ્ત્રોક્ત જ્ઞાન હતું. સંપ્રદાયના બધા ગ્રંથોમાં ઊંડા ઊતરેલા હતા. સંપ્રદાયના મોટા મોટા આચાર્યો, કોઠારીઓ, સંતો, તે બધાની સેવા કરી એમણે આ જ્ઞાન દૃઢ કર્યું છે. મનમાં આવ્યું, સ્વપ્ન આવ્યું એવી આ વાત નથી.

શાસ્ત્રીજી મહારાજ નાનપણથી જ એવા સમર્થ હતા. એમની ઉપર અક્ષરમૂર્તિ ગુણાતીતાનંદ સ્વામીના આશીર્વાદ હતા. શુકાનંદ સ્વામી કે જે મહારાજનો જમણો હાથ હતા, એમના આશીર્વાદ હતા કે આ તો એક મહાન સંત થશે. હજારો, લાખો માણસને ભગવાન ભજાવશે. બાલ્યાવસ્થામાં આવા બેય મહાન સંતના આશીર્વાદ મળ્યા હતા - આ કામ ભગવાનનું કરવા આવ્યા છે, તે ભગવાનનું સર્વોપરિ કાર્ય કરશે.

આ વાત નાનપણથી જ એમના જીવનમાં જોવા મળી છે. વરસાદ થાય અને ધૂળ ભીની થઈ હોય એ ભેગી કરી મંદિરના દેરા જેવું કરી, ઉપર ધજા ફરકાવતા, ઠાકોરજી પધરાવતા અને આરતી ઉતારતા.

એમને દૃઢ હતું કે આ અક્ષરપુરુષોત્તમનું જ્ઞાન સાચું છે. એમને ઘણાં વિઘ્નો આવ્યાં, ઉપાધિ પણ થઈ, એમના દેહને નાશ કરવાના પણ ઘણા પ્રયત્નો થયા, પણ છતાં ભગવાન બધાનું સારું કરે એ જ એમની ભાવના હતી. એમણે કોઈનો પ્રતિકાર નથી કર્યો. કોઈ કહે કે ફલાણાએ તમારા પર આવું કર્યું. તો શાસ્ત્રીજી મહારાજ કહે, ‘ભગવાન જે કરતા હશે તે સારા માટે કરતા હશે.’ એમણે કોઈ કોર્ટ કે કચેરી કરી નથી. કોઈ પ્રતિકાર પણ કર્યો નથી, કેવળ સાધુતા.

વરતાલથી બહાર નીકળ્યા ત્યારે કોઈ સાધન નહોતું, સંતો નહોતા, પૈસા નહોતા, હરિભક્તો પણ ઝાઝા નહીં ! છતાં આવી જબરજસ્ત સંસ્થા ઊભી કરી, એ કેવા સમર્થ કહેવાય ! હજારોને અક્ષરપુરુષોત્તમનું જ્ઞાન જીવમાં બેસાડી દેવું એ જેવી તેવી શક્તિ નથી. શાસ્ત્રીજી મહારાજ શૂન્યમાંથી સર્જન કરવાની શક્તિ ધરાવતા હતા.

કાર્ય ઉપરથી કારણનો ખ્યાલ આવે.

એ દેખાવે દેખાતા નાના. કેટલાક લોકો કહેતા કે શાસ્ત્રી મૂઠી હાડકાનાં છે, તે શું કરવાના ? પણ એમણે એવું વિરાટ કાર્ય કરી બતાવ્યું કે ‘જેના વેરી ઘાવ વખાણે !’ એવું કાર્ય કર્યું, જે આખી દુનિયાએ જોયું.

શાસ્ત્રીજી મહારાજ લોખંડી પુરુષ હતા. તેમણે બોચાસણવાસી અક્ષરપુરુષોત્તમ સંસ્થા એકલે હાથે ઊભી કરી. ભગવાનની પ્રેરણાથી કર્યું. લોકો ગમે તેવું બોલે પણ ધ્યેય સામે રાખી કાર્ય કર્યું.

સ્વામિનારાયણ ભગવાનનો શુદ્ધ સિદ્ધાંત જગતમાં પ્રવર્તે અને અનંત જીવ સ્વામિનારાયણ ભગવાનના દિવ્ય ધામને પામે

એ માટે જ શાસ્ત્રીજી મહારાજનો અવતાર હતો. એ દિવ્યપુરુષ હતા. એમનો પ્રભાવ અને છટા જબરજસ્ત. આટલું મોટું કાર્ય કરવું એ કાંઈ સામાન્ય વ્યક્તિનું કામ નહીં. અત્યારે તો પૈસા, માણસ બધું હોવા છતાં કામનો આરંભ કરવો મુશ્કેલ છે. જ્યારે એમને તો કાંઈ જ ન હતું, છતાં ડાહ્યાનું મંદિર (સારંગપુર મંદિર) ગગનમાં ગાજે એવું કરી નાંખ્યું. એ વખતે આવો વિચાર આવવો એ જ મોટી વાત છે.

સારંગપુર જેવા નાના ગામમાં જબરજસ્ત મંદિર કર્યું. અહીં મંદિર કરવાનો વિચાર કોઈને ન આવે. પણ શ્રીજીમહારાજનો સંકલ્પ હતો. એટલે અહીં જ ભવ્ય મંદિર કર્યું. સ્વામીએ આ રીતે ગામડાનો વિકાસ કર્યો. આજે ગામડાં તૂટીને શહેરમાં જાય છે. ત્યારે સ્વામીએ ગામડામાં જ મંદિર કર્યું, ડાહ્યાનું ! શાસ્ત્રીજી મહારાજની દૃષ્ટિ અને કાર્ય વિશાળ. એ વખતની સ્થિતિમાં આવો વિચાર જ ન આવે પણ એ તો ભગવાનનું સાક્ષાત્ સ્વરૂપ હતા. તો જ આવું કાર્ય થઈ શકે.

શાસ્ત્રીજી મહારાજમાં વિશેષતા હતી કે કોઈ વસ્તુ શક્ય ન હોય છતાં હિંમતપૂર્વક કહેતા કે આ કાર્ય થશે. ગઢડામાં આરસનું મંદિર આપણે જોઈએ છીએ કે આ શાસ્ત્રીજી મહારાજનું કાર્ય છે. ગામમાં કોઈ પૂછે નહીં ને પટેલને ઘેર ઊનાં પાણી. ભાવનગર સ્ટેટ આપણને જમીન આપવા તૈયાર નહીં છતાં એટલી મક્કમતાથી કહે, ‘મારે આ ટેકરા પર મંદિર કરવું છે.’ સેવામાં હતો. એટલે મારે એમની સાથે દસ-પંદર વખત ગઢડા જવાનું થયેલું. પણ જ્યારે જ્યારે ઘેલામાં સ્નાન કરે ત્યારે કહે, ‘અહીં ટેકરા પર મંદિર કરવું છે !’ તે ખરેખર રાજપાલટો કરીને પણ જગ્યા મેળવી. જે શક્ય ન હતું.

શાસ્ત્રીજી મહારાજે શૂન્યમાંથી સર્જન કર્યું છે. એમનું કાર્ય વિચારતાં થંભી જવાય. મુશ્કેલીઓમાં પણ આગળ વધ્યા. એમને ભગવાન થવાનો કે મનાવા-પૂજવાનો સંકલ્પ ન હતો. અક્ષરપુરુષોત્તમ માટે જ કાર્ય કર્યું છે.

કોઈને અક્ષરપુરુષોત્તમની વાત કરવામાં એમને આગસ નહીં. ન સમજે તોય વાત કરે જ. એક વખત નહીં, પણ પચ્ચીસ પચ્ચીસ વખત વાત કરી છે. ક્યારેક એક માણસને વાત સમજાવવા આખી રાતનો સમય કાઢ્યો છે. અક્ષરપુરુષોત્તમના જ્ઞાનના પ્રવર્તનમાં વિઘ્નો એટલાં જ આવ્યાં. છતાં ધીરતા-સ્થિરતા રાખીને કાર્ય કર્યું ગયા. કોઈની સામું જોયું નહીં. કોઈની વાત મન ઉપર લાગ્યા નહીં. સુખ-દુઃખ, માન-અપમાન વેઠીનેય સૌ આ મારગ સમજે એ આશયથી જબરજસ્ત કાર્ય એમણે કર્યું. એક માણસ સમજાવવા તૈયાર હોય તો એના માટે સો ગાઉ જાય. આખી રાત જાગે. અક્ષરપુરુષોત્તમનો ભક્ત એટલે માથાનો મુગટ. એવો એમને મહિમા.

શાસ્ત્રીજી મહારાજ અને યોગીજી મહારાજે આખી જિંદગી પોતાના દેહના સુખ માટે કાંઈ કર્યું નથી. આ બધાં મંદિરો, ધર્મશાળા, વગેરે બધું કર્યું એમાં દેહનું સુખ તો ભોગવ્યું જ નથી. ગામડે ફરીને ભિક્ષા માંગીને પણ આપણા માટે આ બધી સુવિધાઓ કરી આપી છે. એમણે તો કષ્ટો જ સહન કર્યા છે.

શાસ્ત્રીજી મહારાજને સાફસૂફી કરતાં, લીંપણ કરતાં ને ચોકા કરતા પણ જોયા છે. શાસ્ત્રીજી મહારાજ અને યોગીજી મહારાજે માથે પથરા લીધા છે. ચૂનો કાલવ્યો છે. અત્યારે ગોંડળમાં પાછળ વડ આગળ જે ઓરડા છે એમાં સૂઈ રહેતા. બે ઓરડા હતા એમાં એકમાં રસોડું અને એકમાં સામાન એટલે ટાઢ-તડકો હોય કે વરસાદ બહાર ઝાડ નીચે જ સૂઈ રહેવાનું. તે દાડે પલંગ પર પંખા ન ફરતા. એ પુરુષોએ ભગવાનને રાજી કરવા કામ કર્યું.

શાસ્ત્રીજી મહારાજનું જીવન કેવું સાદું! લાખોના તારણહાર, પણ ધોતિયાને ડાંડિયું (જૂના ઘસાઈ ગયેલા ધોતિયાને ફરીથી સાંધીને પહેરાતું ધોતિયું) કરતા. માથાનો (પાઘનો) રૂમાલ પણ જેમ તેમ કરી નાખે. પોતાની મહત્તા વધે એ ભાવ જ નહીં.

કેટલાક કહેતા કે શાસ્ત્રીજી મહારાજને ભગવાન થવું છે, પણ એ ઠાકોરજીને જ કાયમ આગળ રાખતા. કદાચ કોઈ કહે તો સ્વામી ધખી પણ જતા કે શ્રીજીમહારાજને મૂકીને ક્યાં વાત કરો છો ? વડતાલ સંસ્થાનું કોઈ વાંકું બોલતા હોય તો એને પણ ખખડાવી નાખે કે આપણે બોલાય નહીં. શ્રીજીમહારાજે મંદિર કરેલાં છે, એ મંદિરના આચાર્ય કે સાધુ, એ કોઈનું કશું ભૂંડું બોલાય જ નહીં. અપમાન કરીને કાઢ્યા તોપણ એનું કોઈ દિવસ એમણે ખરાબ ઈચ્છ્યું નથી. કેટલાય હરિભક્તોને વડતાલના હરિકૃષ્ણ મહારાજની માનતા આપતા, વડતાલમાં ધર્મદો આપવાનું પણ કહેતા. એટલે વડતાલથી નીકળ્યા પછી એમનું હલકું પાડવું, એમને નીચા પાડવા, ખરાબ દેખાડવું, એવું ક્યારેય નહીં. ભગવાન સ્વામિનારાયણ જે કાર્ય કરી ગયા, જે દેવો બેસાડ્યા, જે મંદિરો કર્યા - એનો અનાદર, અભાવ, અરુચિ ન થવી જોઈએ. એ એમના જીવમાં દંઢ હતું.

સાધુ સાધુતામાં રહે તો બધા એને પૂજે. શાસ્ત્રીજી મહારાજ નીકળ્યા ત્યારે આજ્ઞા-ઉપાસના અને સાધુતા બધું જ દંઢ હતું. ધન અને સ્ત્રીનો સંપૂર્ણ ત્યાગ. નિષ્કામ, નિર્લોભ વગેરે પંચ વર્તમાનોમાં કોઈ દિવસ ચૂક નહીં. અને ગમે એટલો વિરોધ હોવા છતાં સામે વિરોધનો એક શબ્દ પણ ઉચ્ચાર્યો નથી, વિરોધમાં લખ્યું નથી, કેસ પણ કર્યો નથી, સહન કરી લીધું છે. વડતાલથી

નીકળતી વખતે પણ હરિકૃષ્ણ મહારાજને પ્રાર્થના કરી કે તમે સાથે રહેજો. ભગવાનમાં શ્રદ્ધા ને મહારાજની આજ્ઞા પ્રમાણે વર્તન હતું તો આજે વિશ્વમાં અક્ષરપુરુષોત્તમનું નામ ગાજી ગયું.

તમે બીજાને હલકા પાડો તો તમે હલકા પડવાના છો. સૂર્ય સામી ધૂળ નાખો તો પોતા ઉપર આવે છે. એમણે કોઈના પર ધૂળ નાખી જ નથી. જોગી મહારાજને તો થાથાથાબડા જેવાનોય અભાવ આવ્યો નથી. એટલે આ સંસ્થાના વિકાસમાં સાધુતા છે, જ્ઞાનની પૂરેપૂરી દૃઢતા છે, એને લઈને આ કાર્ય થયું છે.

શાસ્ત્રીજી મહારાજે મંદિરો કર્યા છે એના પાયામાં શ્રીજીમહારાજે વચનામૃતમાં વાત કરી છે એ અક્ષરપુરુષોત્તમનું જ્ઞાન છે. શ્રીજીમહારાજે પોતે વાત કરી કે હું અક્ષરધામમાંથી આવ્યો છું ને મારું ધામ જે અક્ષર અને મુક્તોને સાથે લઈને આવ્યો છું. આ પ્રમાણે તમારે વાત સમજવી અને બીજાને કરવી. ભગવાનની એ આજ્ઞા છે. શાસ્ત્રીજી મહારાજે એ આજ્ઞાનું પાલન કર્યું છે. તેમાં કોઈ બનાવટ નથી. કોઈને ગેરરસ્તે લઈ જવાનું પણ નથી. શ્રીજીમહારાજે કહ્યું કે કોઈ કૂવામાં માથાભર તમને ડુબાડી દઈ માથે પાણો ઢાંકી દઈએ એમાં મારું શું સારું થાય ? બીજાને ખોટે રસ્તે ચડાવું એમાં મારું શું સારું થાય ? એમ એ જ રીત શાસ્ત્રીજી મહારાજે પ્રવર્તાવી છે. એમને એક જ હતું કે શ્રીજીમહારાજ જે સિદ્ધાંત લઈને આવ્યા છે એ સિદ્ધાંતનું પ્રવર્તન કરવું છે.

શાસ્ત્રીજી મહારાજે જે કંઈ કર્યું છે એ સમજી-વિચારીને આપણા કલ્યાણ માટે કર્યું છે. શ્રીજીમહારાજ આ લોકમાં આવ્યા એને સાર્થક કરવા માટે એમણે આ બધી વાત કરી છે.

શાસ્ત્રીજી મહારાજ કહેતા, સાચા દેવળે ઘંટ વાગે. મંદિર હોય પણ એમાં ઠાકોરજી ન હોય, આરતી-પૂજા ન થતાં હોય તો તેને ખંડેર કહેવાય. શાસ્ત્રીજી મહારાજ કહેતા, આપણું જ્ઞાન સાચું છે, આપણો સિદ્ધાંત સાચો છે, શ્રીજીમહારાજના શુદ્ધ સિદ્ધાંતની જ વાત છે, તેથી ડંકા વાગશે. જેમ સાચા મંદિરમાં આરતી-પૂજા થાય ને ડંકા વાગે તેમ.

આ કાર્ય ભગવાન ને સંતનું છે. શાસ્ત્રીજી મહારાજ જેવા સમર્થ પુરુષે આ કાર્ય કર્યું છે. આ વાતને આજે ૧૦૦ વરસ થયાં છે. એમણે ૧૦૦ વર્ષ નહીં, હજાર વર્ષ પછીના ભવિષ્યનો વિચાર કરેલો છે. એ તો ભગવાનના પુરુષ એટલે બધી રીતે ત્રિકાલજ્ઞાની હતા. જગતની દૃષ્ટિએ પણ બુદ્ધિશાળીમાં બુદ્ધિશાળી હતા. દરેક કાર્ય બહુ વિચક્ષણ રીતે જ કરેલું છે.

એ વારસો આપણે સાચવવાનો છે. એ વારસો સાચવીશું તો આથી હજી મોટો સત્સંગ સો વરસે થશે. સો વરસનો ઠેલ આપણે મારવાનો છે. એમણે જો સો વરસનો ઠેલ માર્યો છે તો એય આપણે બધા આનંદપ્રમોદથી જ્ઞાન કરીએ છીએ, તો આપણે એવું જીવન જીવીએ, એવી રીતનું આપણું કાર્ય થાય જેથી કરીને આવા હજારો-લાખો થઈ જાય ને સો વરસ સુધી ઠેલ વાગી જાય. એવું કાર્ય કરવું છે.

(૮-૨-૮૬, ૨-૫-૧૯૮૭, ૩૧-૧૦-૧૯૮૨, ૪-૨-૧૯૮૫, ૧૮-૧-૧૯૮૮, ૧૦-૧૦-૨૦૦૬, ૨૨-૨૭-૧૧-૨૦૦૬

વગેરે દિવસોએ કરેલા વાર્તાલાપોમાંથી સંકલિત.) ◆

પ્રમુખસ્વામીમાં વિશ્વ શાંતિનાં દર્શન

Pramukh Swami Maharaj: Ideal of World Peace

મિત્રો, આપ સૌને મારા પ્રણામ. થોડીક ક્ષણો પહેલાં જ હું પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજના સાંનિધ્યમાં હતો. પ્રોફેસર અરુણ તિવારીના સહયોગથી મેં એક પુસ્તક લખ્યું છે. પ્રમુખસ્વામી મહારાજને મેં જ્યારે તે પુસ્તક અર્પણ કર્યું ત્યારે તેમણે સ્મિત રેલાવ્યું. સ્મિત તો બધા કરે છે, પરંતુ પ્રમુખસ્વામી મહારાજ જ્યારે સ્મિત કરે છે ત્યારે તે કંઈક સૂચક હોય છે. પ્રમુખસ્વામી મહારાજના સાંનિધ્યમાં હંમેશાં મને એક મહાન સંદેશ પ્રાપ્ત થયો છે.

આપ સૌ મારી સાથે આ સંદેશને ઝીલો :

જ્યારે હૃદયમાં સદાચાર હોય છે,
ત્યારે ચારિત્ર્યમાં સૌંદર્ય નીખરી ઊઠે છે.
જ્યારે ચારિત્ર્યમાં સૌંદર્ય નીખરે છે,
ત્યારે પરિવારમાં સંવાદિતા વિલસે છે.
જ્યારે પરિવારોમાં સંવાદિતા વિલસે છે,
ત્યારે રાષ્ટ્રમાં સુશાસન પ્રવર્તે છે.
જ્યારે રાષ્ટ્રોમાં સુશાસન થાય છે,
ત્યારે સમસ્ત વિશ્વમાં શાંતિ પ્રવર્તે છે.

પ્રમુખસ્વામી મહારાજને મળ્યો તે જ ક્ષણે મને એમના હૃદયની પવિત્રતાનો અનુભવ થયો અને તેમાં વિશ્વશાંતિનાં દર્શન થયાં. જ્યારે હૃદયમાં પવિત્રતા હોય છે ત્યારે વિશ્વમાં શાંતિ પ્રસ્થાપિત થાય છે. મેં આજે આ જ ભાવનાં દર્શન કર્યાં. આવી અનુભૂતિ પરમ આનંદની સ્થિતિ છે.

આપણને ખરેખર શાંતિ જરૂર છે? ગરીબી મિટાવતી સમૃદ્ધિની, ઈશ્વરના ડર વગરની શાંતિની અને જ્યાં રાષ્ટ્રનો દરેક નાગરિક સુખેથી રહી શકે એવા સ્થાનની જરૂર છે. અને આ જ સંદેશો પ્રમુખસ્વામી મહારાજ અને તેમના આ મહાન સ્થળેથી પ્રસારિત થાય છે.

મિત્રો, હું પરમ પૂજ્ય પ્રમુખસ્વામી મહારાજને મળવા માટે અને તેમને મારા મિત્ર પ્રોફેસર અરુણ તિવારીના સહયોગમાં મેં લખેલ પુસ્તક ‘ટ્રેન્સેન્ડન્સ : માય સ્પિરિચ્યુઅલ એક્સપિરિયન્સીસ વિથ પ્રમુખસ્વામીજી’ રૂબરૂ અર્પણ કરવા સારંગપુર આવ્યો છું. મારા આ અતિપ્રિય પ્રોજેક્ટ પર હું ઘણાં વર્ષોથી કાર્યરત હતો. નવી દિલ્હી અક્ષરધામના ઉદ્ઘાટન સમારોહમાં મેં પ્રમુખસ્વામી મહારાજને વચન આપ્યું હતું કે હું એમના મહાન આધ્યાત્મિક જીવન પર એક પુસ્તક લખીશ. આજે મેં એ વચન પૂરું કર્યું છે.

મિત્રો, ગઈકાલે હું વિવિધ લોકો સાથે હતો : એક હતા જૈન મુનિ, એક હતા મક્કાની યાત્રા કરીને આવેલા હાજી અને ત્રીજા હતા એક સ્વામીજી. ‘ટ્રેન્સેન્ડન્સ’ પુસ્તકની પ્રત જોઈ અને એ ત્રણેયે મને એક સવાલ કર્યો કે આ પુસ્તક લખવાનું કારણ શું હતું? કઈ ઘટનાએ મને તેની પ્રેરણા આપી?

મેં તેમને કહ્યું : જ્યારે ૩૦ જૂન, ૨૦૦૧ના રોજ હું પ્રથમ વખત પ્રમુખસ્વામી મહારાજને મળ્યો, તે દિવસથી તેઓ મને પ્રેરણા આપી રહ્યા છે. પરંતુ એક પ્રસંગ મારા હૃદયને સ્પર્શી ગયો હતો. ૨૪ સપ્ટેમ્બર, ૨૦૦૨ના રોજ ગાંધીનગર અક્ષરધામ ઉપર આતંકવાદી હુમલો થયો, હુમલા દરમિયાન મૃત્યુ પામેલા ઘણા બધા હરિભક્તો અને આતંકવાદીઓના મૃતદેહ મળી

આવ્યા. પ્રમુખસ્વામી મહારાજ ત્યાં કમંડળમાં ગંગાજળ લઈને આવ્યા અને કોઈપણ જાતના ભેદભાવ વગર તેમણે જ્યાં લોકો મૃત્યુ પામ્યા હતા ત્યાં સર્વત્ર ગંગાજળનો છંટકાવ કર્યો, પછી ભલે તે હરિભક્ત હોય, સુરક્ષાદળનો જવાન હોય કે પછી આતંકવાદી ! તેમણે વિશ્વને એક મૂક સંદેશ આપ્યો કે દરેક માનવીનું જીવન પવિત્ર છે. એક ભગવાન જ જીવન આપે છે અને ભગવાન જ પ્રાણ હરે છે. પ્રમુખસ્વામી મહારાજની એ મહાનતાએ જ મને તેમના આધ્યાત્મિક જીવનનો અભ્યાસ કરવાની પ્રેરણા અને શક્તિ પ્રદાન કરી, અને મારા મિત્ર અરુણની સહાયથી આ પુસ્તકનું આલેખન થયું.

મિત્રો, મારી આધ્યાત્મિક યાત્રાને આજે આપ સમક્ષ રજૂ કરવાનો મને વિચાર સ્ફૂર્યો છે. આપ સૌને મારો એક પ્રશ્ન છે, ‘આપ કેવી રીતે અદ્વિતીય બનશો ?’ આપની સાથેના મારા વાર્તાલાપ પછી આપ આ સુંદર ઓડિટોરિયમમાંથી બહાર પ્રસ્થાન કરો ત્યારે તમે એવા આત્મવિશ્વાસથી છલકાતા હશો કે ‘હું અદ્વિતીય બની શકીશ’.

અદ્વિતીય બનો

વહાલા મિત્રો, ઉપર છત તરફ જુઓ. ત્યાં તમને શું દેખાય છે ? ઈલેક્ટ્રિક લેમ્પ. તેને જોતાં જ આ વિશ્વને ઈલેક્ટ્રિક લેમ્પ અને ઈલેક્ટ્રિક લાઈટિંગ સિસ્ટમની શોધ કરનાર થોમસ આલ્વા એડિસન વિશે અને તેઓના અજોડ પ્રદાન અંગે વિચારો આવવા માંડે છે. ૯ વર્ષની ઉંમરે જ્યારે તે તેનાં માતા-પિતા સાથે ન્યૂયોર્કમાં રહેતા હતા ત્યારે તેઓ અજવાળું કરવા તેલના દીવાનો કે મીણબત્તીનો ઉપયોગ કરતા હતા. તેણે મક્કમતા દર્શાવતાં કહ્યું હતું કે એક દિવસ ફેરાડેના નિયમના આધારે હું ન્યૂયોર્કને ઝળહળતું કરી દઈશ. અને તેણે સમગ્ર વિશ્વને ઝળહળતું કરી દીધું. આમ તેનું વ્યક્તિત્વ અદ્વિતીય હતું.

જ્યારે તમે તમારા ઘર ઉપરથી પસાર થતા એરોપ્લેનનો અવાજ સાંભળશો ત્યારે તમે કોને યાદ કરશો ? રાઈટ બંધુઓએ સાબિત કર્યું હતું કે માનવી પોતાની શક્તિથી સાહસ કરીને આકાશમાં ઊડી શકે છે. સન ૧૮૮૫માં પ્રો. કેલ્વિને કહ્યું હતું કે હવા કરતાં વધારે વજન ધરાવતી કોઈ પણ વસ્તુ ઊડી ન શકે. પરંતુ રાઈટ બંધુઓએ સાબિત કર્યું કે માનવી ઊડી શકે છે. એટલે ‘આ વસ્તુ અશક્ય છે’ એવું કહેનાર લોકોની નજીક ફરકશો પણ નહીં. વિજ્ઞાન અને ટેકનોલોજીની મદદથી દરેક વસ્તુ સંભવિત છે.

ટેલિફોન તમને કોની યાદ અપાવે છે ? એલેક્ઝાન્ડર ગ્રેહામ બેલ.

જ્યારે બધા પ્રવાસીઓ દરિયાઈ માર્ગે ઈંગ્લેન્ડથી ભારતની મુસાફરી કરી રહ્યા હતા ત્યારે એક અનોખો માનવી એ દરિયાઈ મુસાફરી દરમિયાન ચિંતન કરી રહ્યો હતો કે જ્યાં આકાશ અને દરિયાનું મિલન થાય છે ત્યાં ક્ષિતિજનો રંગ આસમાની શા માટે દેખાય છે ? એમનું નવ વર્ષનું સંશોધન અંતે પ્રકાશ પ્રસરણના સિદ્ધાંતમાં પરિણમ્યું અને તેઓને નોબેલ પ્રાઈઝ પ્રાપ્ત થયું. તે હતા સર સી. વી. રામન્.

મિત્રો, એક મહાન વૈજ્ઞાનિક મહિલા હતી, જે રેડિયમની શોધના કારણે પ્રખ્યાત છે. તેમણે એક નહીં, પરંતુ બે નોબેલ પ્રાઈઝ જીત્યાં હતાં. એક ભૌતિકશાસ્ત્ર માટે અને બીજું રસાયણશાસ્ત્ર માટે. આ મહિલા કોણ હતી ? તેમનું નામ હતું – મેડમ ક્યૂરી. મેડમ ક્યૂરીએ રેડિયમ શોધી કાઢ્યું અને તેમાંથી ઉત્સર્જિત થતાં વિ-કિરણોની માનવ શરીર પર શું અસર થાય છે તે પણ શોધી કાઢ્યું. જે વિ-કિરણોની તેમણે શોધ કરી હતી તેની તેમના શરીર પર અસર થઈ અને માનવજાતને શારીરિક દુઃખમાંથી મુક્ત કરવા માટે તેમણે પોતાના પ્રાણનું બલિદાન આપ્યું.

આ તમામ પ્રતિષ્ઠિત વ્યક્તિઓ અદ્વિતીય છે. તેમણે પોતાનું જીવન વિજ્ઞાનને સમર્પિત કરી દીધું હતું. તેમને આવું કરવાની પ્રેરણા કોણે આપી ? કઈ બાબતે તેમને અદ્વિતીય બનાવ્યા ?

મિત્રો, આજપર્યંત છેલ્લા બે દાયકામાં ભારત અને વિદેશના મળીને બે કરોડ ને દસ લાખથી વધુ યુવાનોને હું મળી ચૂક્યો છું. મેં જોયું છે કે દરેક યુવાનમાં અદ્વિતીય બનવાની અભિલાષા પહેલી છે, પરંતુ તમારી આસપાસનું વિશ્વ તમને બીજા બધાના જેવા જ બનાવવાનો દિવસ-રાત ભરપૂર પ્રયત્ન કરે છે. મારા યુવાનમિત્રો, આ કઠિન યુદ્ધને લડવાનો તમારી સામે પડકાર છે. આ યુદ્ધ લડવાની કોઈપણ માણસ કલ્પના કરી શકે છે અને નિર્ધારિત લક્ષ્ય હાંસલ ન થાય ત્યાં સુધી તમે હાર માનશો નહીં. અને આ જ બાબત તમને અદ્વિતીય બનાવે છે.

અદ્વિતીય કેવી રીતે બની શકાય ?

જીવન એક સફર છે અને ગમે તેવા ખરાબ રસ્તા હોવા છતાં તે ચાલુ રહેવી જોઈએ. મેં કરેલા અભ્યાસ મુજબ અજોડ કે અદ્વિતીય લોકોમાં ચાર વિશેષતાઓ અવશ્ય હોય છે. આ ચાર વિશેષતાઓમાંનું પ્રથમ સોપાન એટલે જીવનના મહાન ધ્યેય સુધી પહોંચવા તમે કયો માર્ગ અપનાવશો તે અંગેનો નિર્ણય. નીચું ધ્યેય રાખવું એ અપરાધ છે. માટે હંમેશાં ઊંચું ધ્યેય રાખવું

જોઈએ.

બીજું સોપાન એટલે મહાન પુસ્તકો, મહાનુભાવો અને મહાન ગુરુ દ્વારા સતત જ્ઞાન પ્રાપ્ત કરતા રહેવું.

ત્રીજું સોપાન એટલે સખત પરિશ્રમ. સમગ્ર વિશ્વ જ્યારે નિદ્રાધીન હોય છે ત્યારે કેટલાક લોકોના ઘરમાંથી પ્રકાશ રેલાતો હોય છે.

અને કોઈપણ સમસ્યાને આપણા પર સવાર થવા દેવી નહીં તે ચોથું સોપાન છે. તમે જ્યારે કોઈ કાર્ય કરી રહ્યા હો પછી ભલે તે આધ્યાત્મિક, ટેકનિકલ, વૈજ્ઞાનિક કે રાજકીય હોય, પરંતુ તેમાં કેટલીક સમસ્યાઓ તો આવવાની જ. તમે એ સમસ્યાઓને તમારા પર સવાર થવા દેશો નહીં. તમારે એ સમસ્યાઓ પર સવાર થઈ જવાનું છે. સમસ્યાઓને પરાસ્ત કરો અને સફળ બનો. આને જ ખંત કહી શકાય.

જો તમે અદ્વિતીય બનવા માંગતા હો તો તમારામાં ઊંચું ધ્યેય, સતત જ્ઞાનપ્રાપ્તિ, સખત પરિશ્રમ અને ખંત — આ ચારેય સદ્ગુણો હોવા આવશ્યક છે.

ઊડવા માટેની પાંખો

હવે હું તમને એ જણાવવા ઈચ્છું છું કે કેવી રીતે ઊડી શકાય? શું તમે ઊડવા આતુર છો? તો મારી સાથે આ શબ્દોને ઝીલો.

હું જન્મથી જ શક્તિસંપન્ન છું.

હું સારપ અને વિશ્વાસ સાથે જન્મ્યો છું.

હું સ્વપ્ન અને વિચારો લઈ જન્મ્યો છું.

હું જન્મથી જ સાહસિક છું.

તેથી હું ઘૂંટણીયે પડીને હાર સ્વીકારવા જન્મ્યો નથી.

મારી પાસે પાંખો છે. હું ઊડીશ, હું ઊડીશ અને ઊડીશ.

સંપીને કાર્ય કરો

મિત્રો, વરિષ્ઠ સંતો સાથેના વાર્તાલાપમાં મેં તેમને એક વાર્તા કહી હતી. ૧૯૪૧માં હું ૧૦ વર્ષનો હતો ત્યારે રામેશ્વરમ્માં એલિમેન્ટરી સ્કૂલમાં અભ્યાસ કરતો હતો. તે સમયે ભારતમાં અંગ્રેજોનું શાસન હતું. શાળાનો સમય પૂરો થયા પછી હું દરરોજ રાત્રે ૮:૦૦ વાગે ઘરે પહોંચતો હતો. કારણ એ હતું કે સાંજે ૬:૦૦ થી ૮:૦૦ દરમિયાન હું છાપાં નાખવાનું કામ કરતો હતો. હું ઘરોઘર છાપાં નાખવાવાળો ફેરિયો હતો. એક વખત હું ઘરે આવ્યો ત્યારે મેં ત્રણ વ્યક્તિઓને જોઈ : રામેશ્વરમ્ શિવ મંદિરના મુખ્ય પૂજારી લક્ષ્મણ શાસ્ત્રીગલ, રામેશ્વરમ્માં પ્રથમ ચર્ચનું નિર્માણ કરનાર ફાધર બોડલ અને મારા પિતાજી કે જેઓ મસ્જિદના ઈમામ હતા. દર શુક્રવારે હું એ ત્રણેયને મારા ઘરે જોતો હતો. મને આશ્ચર્ય થતું હતું કારણ કે એ ત્રણેયનો પોશાક અલગ હતો. એ ત્રણેય ભેગા બેસીને ચર્ચા કરતા હતા. તે વખતે ૧૯૪૧નું યુદ્ધ ચાલુ હતું અને અમારા ટાપુમાં દુષ્કાળની સ્થિતિ હતી. આ સ્થિતિમાં લોકો માટે રોજગારી કેવી રીતે ઊભી કરવી? આફતના સમયે લોકોને કેવી રીતે સહાય કરવી? અને લોકોના આરોગ્ય અને શિક્ષણ પદ્ધતિની કેવી રીતે દરકાર કરવી? — તે અંગે એ ત્રણેય ધર્મગુરુઓ સતત ચર્ચા કરતા હતા. તેઓની પાસેથી હું સુંદર પાઠ શીખ્યો કે સંપ રાખીને કાર્ય કઈ રીતે કરી શકાય.

મહાન નેતૃત્વ

એક યુવા ઈજનેર તરીકે મેં મહાન વિજ્ઞાની ડૉ. બ્રહ્મપ્રકાશ સાથે કામ કર્યું હતું. તેમણે મને શીખવ્યું હતું કે આપણી વ્યક્તિગત પહોંચની બહાર જઈને કાર્યો પાર પાડવામાં અને એક ટીમની રચના કરવામાં બીજાનાં અભિપ્રાય અને મંતવ્યો અંગે સહિષ્ણુ થવું કેટલું આવશ્યક છે! કેટલાંક કામો એવાં હોય છે કે જે એક વ્યક્તિ પાર પાડી શકે છે. જ્યારે બીજાં કેટલાંક કામો એવાં છે કે જ્યાં ટીમની જરૂર પડે છે. તેમણે મને શીખવ્યું હતું કે જીવન એક અમૂલ્ય ભેટ છે, જે જવાબદારી સહિત જ પ્રાપ્ત થાય છે. આ ભેટ વડે આપણે આપણી ક્ષમતાઓનો વિનિયોગ કરી વિશ્વને વધુ સુંદર બનાવીએ — એવી આપણી પાસે અપેક્ષા રાખવામાં આવી છે.

સન ૧૯૭૮માં હું પ્રોજેક્ટ ડાઈરેક્ટર બન્યો. મેં ડૉ. સતીશ ધવન સાથે કામ કર્યું. તેમણે મને શીખવ્યું હતું કે એક સારો નેતા પોતાની ટીમની નિષ્ફળતાની જવાબદારી પોતાના શિરે ઉપાડી લે છે. પ્રથમ SLV3 પ્રોગ્રામ વખતે હું જ્યારે નિષ્ફળ ગયો ત્યારે ચેરમેન સતીશ ધવને તે નિષ્ફળતાની જવાબદારી પોતાના શિરે લઈ લીધી હતી. ત્યારપછી બીજા વર્ષે હું સફળ

થયો ત્યારે એ સફળતાને બિરદાવવા માટે યોજાયેલી પ્રેસ કોન્ફરન્સને સંબોધવાની કામગીરી સતીશ ધવને મને સોંપી હતી. આને કહેવાય મહાન નેતૃત્વ ! પછી ભલે તે આધ્યાત્મિક, ટેકનિકલ, મીડિયા, રાજકીય કે વિજ્ઞાનના ક્ષેત્રની વાત હોય. નેતાએ સફળતાનો યશ પોતાની ટીમને આપવો જોઈએ. જો નિષ્ફળતા મળે તો નેતાએ તે નિષ્ફળતા પચાવી લેવી જોઈએ. હું જ્યારે ISROમાં કાર્યરત હતો ત્યારે મને આ મહાન પાઠ શીખવા મળ્યો.

તે પછી મારે જૈનમુનિ આચાર્ય મહાપ્રજ્ઞજીને મળવાનું થયું હતું કે જેમણે મને આ પૃથ્વી પર દિવ્ય જીવન હોવાની અને નાશવંત અસ્તિત્વમાં અવિનાશી અસ્તિત્વ હોવાની દૃઢતા કરાવી. તેમની સાથે મેં ‘ફેમિલી એન્ડ ધ નેશન’ પુસ્તક પણ લખ્યું હતું.

પ્રમુખસ્વામી મહારાજ સાથે ભવ્ય મુલાકાત

હું પ્રથમ વખત પ્રમુખસ્વામી મહારાજને મળ્યો તે મારા જીવનનો એક મહત્વનો આધ્યાત્મિક દિવસ હતો. એક દાયકાથી વધુ સમય પહેલાં ભારત સરકારના પ્રિન્સિપલ સાયન્ટિફિક એડવાઈઝર તરીકે મારે ભુજ ખાતે ભૂકંપ બાદ પુનર્વસનના કાર્યની સમીક્ષા કરવા જવાનું થયું હતું. ત્યાં હું સાધુ બ્રહ્મવિહારીદાસને મળ્યો. તેમણે મને પૂછ્યું હતું કે પ્રથમ અણુ વિસ્ફોટ બાદ રોબર્ટ ઓપનહાઈમરે ગીતાને યાદ કરતાં કહ્યું હતું કે, ‘હું સ્વયં કાળ છું. સમગ્ર વિશ્વનો વિધ્વંસ કરનાર હું જ છું.’ તે રીતે તમે જ્યારે ભારતનો પ્રથમ અણુવિસ્ફોટ કર્યો ત્યારે તમારા મનમાં કયો વિચાર આવ્યો હતો ? આ પ્રશ્નથી હું મૂંઝાઈ ગયો હતો. મેં તેમને કહ્યું હતું કે ભગવાનની શક્તિ ક્યારેય વિનાશનું નહીં, પરંતુ મનને જોડવાનું કામ કરે છે. તેના જવાબમાં તેમણે ઉત્તર આપ્યો કે અમારા આધ્યાત્મિક ગુરુ પ્રમુખસ્વામી મહારાજ મહાન ઐક્ય જગાવનારા છે, તેમણે અમારી તમામ ઊર્જાને સંગઠિત કરીને કાટમાળના ઢગલામાંથી જીવનને પુનર્જીવિત અને પુનઃ સ્થાપિત કર્યું છે. હું પ્રભાવિત થઈ ગયો અને આવા મહાન પ્રમુખસ્વામીજીને મળવાની મેં ઈચ્છા પ્રગટ કરી. અને ત્યારથી મારા જીવનની નવી આધ્યાત્મિક યાત્રા શરૂ થઈ. તો મિત્રો, અહીં ઉપસ્થિત સૌને તથા બી.એ.પી.એસ.ને તેની કરુણા, પ્રેમ અને સમજણ વિસ્તારતા મિશન માટે શુભેચ્છા. ♦